

हेतुमाह नेताचेति गणफलेन तुल्यफलत्वात्नेतुरन्तं फलमित्यर्थः ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ महाप्रियः शान्तुस्तेषां वतीर्णाः ॥ २४ ॥ २५ ॥ रश्मिवान्मुख्यः ॥ २६ ॥ २७ ॥  
 नेताचत्वमृषीन्यस्मात्तेनेष्टगुणं फलं ॥ रक्षोगणविकीर्णानितीर्थान्येतानि भारत ॥ न गतानि मन्युर्ध्वेद्रस्त्वामृते कुरुनंदन ॥ १७ ॥ इदं देवर्षिचरितं सर्वतीर्थभि  
 संवृतं ॥ यः पठेत्कल्यमुत्थाय सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ १८ ॥ ऋषिमुखाः सदा यत्र वाल्मीकिस्त्वथ कश्यपः ॥ आत्रेयः कुंडजठरो विश्वामित्रो योगीश्वरः ॥ १९ ॥ अ  
 सिती देवलश्चैव मार्कण्डेयो यथा लवः ॥ भरद्वाजो वसिष्ठश्च मुनिरुद्दालकस्तथा ॥ २० ॥ शौनकः सहपुत्रेण व्यासश्च तपतांवरः ॥ दुर्वासाश्च मुनिश्चेष्टो जावा  
 लिश्च महातपाः ॥ २१ ॥ एते ऋषिवराः सर्वे त्वत्पती क्षास्तपोधनाः ॥ एभिः सह महाराज तीर्थान्येतान्यनुव्रज ॥ २२ ॥ एष ते लोमशो नाम महर्षिरिति धृतिः ॥ समे  
 प्यति महाराज तेन सार्धमनुव्रज ॥ २३ ॥ मयापि सह धर्मज्ञ तीर्थान्येतान्यनुक्रमात् ॥ प्राप्स्यसे महतीं कीर्तिं यथा राजा महाभिषः ॥ २४ ॥ यथा ययातिर्धर्मात्मा  
 यथाराजा पुरुरवाः ॥ तथा त्वं राजशार्दूलस्वेन धर्मेण शोभसे ॥ २५ ॥ यथा भगीरथो राजायथारामश्च विश्रुतः ॥ तथा त्वं सर्वराजभ्यो भ्राजसे रश्मिवानिव ॥  
 ॥ २६ ॥ यथामनुर्यथेक्ष्वाकुर्यथा पूरुमहायशाः ॥ यथा वैव्यो महाराज तथा त्वमपि विश्रुतः ॥ २७ ॥ यथा च वृत्रहा सर्वान्सपत्नान्निर्दहन् पुरा ॥ त्रैलोक्यं पालया  
 मास देवराट्पुंगवः ॥ २८ ॥ तथा शत्रुक्षयं कृत्वा त्वं प्रजाः पालयिष्यसि ॥ स्वधर्मं विजितां मुर्वीं प्राप्य राजीवलोचन ॥ २९ ॥ ख्यातिं यास्यसि धर्मेण कर्त  
 वीर्यार्जुनीयथा ॥ ३० ॥ वैशंपायन उवाच ॥ एवमाश्वास्य राजानं नारदो भगवानृषिः ॥ अनुज्ञाप्य महाराज तत्रैवांतरधीयत ॥ ३१ ॥ युधिष्ठिरो विधर्मा  
 त्मातमेवार्थं विचिंतयन् ॥ तीर्थयात्रां श्रितं पुण्यमृषीणां प्रत्यवेदयत् ॥ ३२ ॥ इति श्रीमहाभारते आरण्यके पर्वणि तीर्थयात्रा पर्वणि पुलस्त्य तीर्थयात्रायां ना  
 रदवाक्ये पंचाशीतितमोऽध्यायः ॥ ८५ ॥ ॥ ३३ ॥ वैशंपायन उवाच ॥ भ्रातृणां मतमाज्ञाय नारदस्य च धीमतः ॥ पितामहसमं धौम्यं प्राह  
 राजा युधिष्ठिरः ॥ १ ॥ मया स पुरुषव्याघ्रोजिष्णुः सत्यपराक्रमः ॥ अस्महेतोर्महाबाहुरमितात्मा विवासितः ॥ २ ॥ सहिवीरो नरकश्च समर्थश्च तपोधनः ॥ कृती च  
 भृशमप्यस्त्रेवासु देवद्विप्रभुः ॥ ३ ॥ अहं ह्येतावुभौ ब्रह्म न कृष्णावरिविधातिनौ ॥ अभिजानामि विक्रान्तौ तथा व्यासः प्रतापवान् ॥ ४ ॥  
 ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ इत्यारण्यके पर्वणि नैलंकं कथेत्तत्रातमावद्वीपं पंचाशीतितमोऽध्यायः ॥ ८५ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

भ्रातृणां मतः ॥ १ ॥ अमितात्मा अभितर्ह्यः

॥ ३३ ॥

॥ ३४ ॥

॥ ३५ ॥

॥ ३६ ॥

॥ ३७ ॥

॥ ३८ ॥

॥ ३९ ॥

॥ ४० ॥

॥ ४१ ॥

॥ ४२ ॥

॥ ४३ ॥

॥ ४४ ॥

॥ ४५ ॥